संग्रहणीय अंक

गांधी-मार्ग

हे राम!

अकथनीय सत्य का ताप

गांधी-मार्ग

अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक

वर्ष 61, अंक 3, मई-जून 2019

गांधी शांति प्रतिष्ठान

1. गांधी : अकथनीय सत्य का ताप	जेम्स डब्ल्यू. डगलस	5
2. गांधी-हत्या : छठी सफलता से पहले	कुमार प्रशांत	60

आवरण : मकबूल फिदा हुसैन के गांधी। हुसैन भारतीय परंपरा के गहन अभ्यासी कलाकार थे। एक अर्थ में गांधी और हुसैन एक ही जमीन पर खड़े मिलते हैं– 'अकथनीय' ताकतों को न गांधी सह्य हुए, न हुसैन! एक को दुनिया छोड़नी पड़ी, दूसरे को देश! नाथूराम गोडसे की तीन गोलियां खाने के बाद की लड़खड़ाती गांधी की काया को आंकते हुए हुसैन उन अनगिनत घावों को भी नहीं भूले, जो हमने गांधी को भरपूर दिए– पूरी अवमानना और कठोरता से; और जिन्हें उन्होंने प्रेमपूर्वक आत्मसात कर लिया। धूल-धूसरित रंगों के अनगिनत धब्बों-से उन घावों को हम उनकी भूलुंठित हो रही काया पर देख सकते हैं।

वार्षिक शुल्क : भारत में 200 रुपये, दो वर्ष के 350 रुपये, आजीवन-1000 रुपये (व्यक्तिगत), 2000 रुपये (संस्थागत), एक प्रति का मूल्य 20 रुपये, डाक खर्च निःशुल्क। दो माह तक न मिलने पर शिकायत लिखें। शुल्क चेक, बैंक ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा 'गांधी पीस फाउंडेशन' के नाम भेजें।

संपादन : कुमार प्रशांत **प्रबंध :** मनोज कुमार झा **प्रसार :** भगवान सिंह

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के लिए अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित

फोन : 011-2323 7491, 2323 7493, फैक्स : 011-2323 6734

Email: gmhindi@gmail.com

मुद्रक : नीता प्रेस, 3574- गली जटवारा, नीयर सबलोक क्लीनिक, दरियागंज, दिल्ली-110002, फोन नं. 8800646548

शुरू में...

वे एकदम दबे पांव कमरे में आए। ऐसे कि उनके आने से किसी को कोई खलल न पड़े। छोटा कद, उम्रसिद्ध काया, अनुभवसंपन्न चेहरा और छोटी पर भेदती आंखें! देख कर ही लगे कि कोई है अलग-सा। साथ के लोगों ने परिचय कराया। वे किनारे वाली कुर्सी में बैठ गए। इस तरह बैठे कि जैसे बैठना भर था उन्हें लेकिन वे वहां थे नहीं। हमारी आपसी बातचीत हिंदी में हो रही थी जिसे न जानने पर भी वे न जानना चाहते थे, न जताना चाहते थे। अंग्रेजी में जब भी कुछ कहा मैंने, उन्हें बातचीत में शरीक करना चाहा तो उन्होंने उतना ही वक्त लिया और उतनी ही जगह घेरी जितनी निहायत जरूरी थी।... ऐसा ही लगता था मुझे जब भी 'अज्ञेय' से मिलता था।

ये जेम्स डब्ल्यू. डगलस थे। डगलस सक्रिय शांति के सिद्ध सिपाही हैं जिसने इराक, इजराइल और फिलिस्तीन की अशांति में लगातार वहां पहुंच-पहुंचकर हाथ डाला है; अपने देश अमरीका में हिंसा, आण्विक हथियार, यौन शोषण व गैर-बराबरी के खिलाफ सक्रिय लड़ाई लड़ी है और जेल जाकर उसकी कीमत भी चुकाई है। वे अपने जैसी ही सक्रिय व बहादुर पत्नी शैली के साथ अमरीका के सबसे गरीब प्रांत अलाबामा की सबसे गरीब बस्ती में रहते हैं और निराश्रितों के लिए मेरी'ज हाउस नाम का घर/संस्था चलाते हैं। "तो आप शैली को साथ नहीं लाए?" मेरे सवाल पर थोड़ा सकुचाते हुए डगलस बोले, "इस बार इतना ही पैसा बचा था कि हममें से कोई एक ही यहां आ सकता था। हमने सोचा, मैं चला जाता हूं, शैली अगले बरस आ जाएगी।... वैसे भी हम मेरी'ज हाउस एकदम अकेला नहीं छोड़ सकते।"

ब्रिटिश कोलंबिया में पले-बढ़े डगलस कैथलिक स्कूलों में पढ़े थे और आणविक मिसाइल उद्योग में काम करने का इरादा रखते थे। लेकिन ऐसा हो न सका। भीतर की कोई आवाज उन्हें यहां-वहां खींचती रही और अंततः वे पहुंचे डोरोथी डे के दायरे में। डोरोथी तब युद्ध व हिंसा के खिलाफ अमरीका की सबसे सशक्त आवाज बन चुकी थीं। युद्ध व आण्विक हथियारों की मुखालफत करने वालों के साथ सड़कों पर उतरते हुए डगलस को एक रास्ता मिला, जो उन्हें ले आया थॉमस मेर्टन के पास– एक ईसाई साधु, शोधकर्ता लेखक और शांति के अनजाने रहस्यों की खोज में लगा साधक! 60 के दशक में मेर्टन ने एक शब्द गढ़ा– अकथनीयः अनस्पीकेबल- और उससे शोध की एक धारा ही बनती चली गई। 60 के दशक में अमरीकी समाज का वह तबका, जिसे अपने देश की कुंडली बदलने की लगन लगी हुई थी और जो लगातार हिंसा की ताकतों को सवालों के घेरे में लेता रहता था, लगातार हुई चार राजनीतिक हत्याओं से दहल गया था। अमरीकी समाज का चेहरा ही अजनबी बन गया। जॉन एफ. केनेडी, मार्टिन लूथर किंग जूनियर, मैल्कम एक्स तथा रॉबर्ट केनेडी की राजनीतिक हत्या से वह विमूढ़ हो गया। मेर्टन को लगा कि ये सभी हत्याएं जैसे किसी आवाज को रोकने के लिए, कुछ बोलने से लोगों को वंचित करने के लिए, कुछ छिपाने के लिए की गई हैं। ईसाई परंपरा जिस

'शैतान' की कल्पना करती है, मेर्टन को लगा कि इन हत्याओं के पीछे वही 'शैतान' अपना खेल खेल रहा है। यहां से 'अनस्पीकेबल' शृंखला की शुरुआत हुई। 2008 में डगलस ने इस शृंखला की अपनी पहली पुस्तक लिखी, जो राष्ट्रपति जॉन फिट्ज़राल्ड केनेडी की हत्या के पीछे की कहानी के बारे में थी। यही पढ़ते-लिखते डगलस गांधीजी की हत्या तक पहुंचे। यहां भी, इन पन्नों में भी उन्हें वे ही लोग, वे ही ताकतें मिलीं जो हत्या को ऐसा सच मानती हैं कि सच की हत्या करने से भी नहीं हिचकती हैं। फिर डगलस को एक सत्यानुभूति हुईः "परिणाम की परवाह किए बगैर अतल अंधकार में जितना उतर सकें हम उतना उतरें, और तब अचानक ही हमें मध्यरात्रि के अंधकार को बेधता वह सत्य मिलेगा जो हमें हिंसा के बंधनों से मुक्त कर, शांति के प्रकाश से आलोकित कर देगा।" गांधीजी की हत्या के अंधकार में गहरे उतर कर डगलस को भी एक प्रकाश मिला जो ईसा से गांधी तक अटूट बहता है।

अब डगलस ने दूसरा 'अनस्पीकेबल' लिखा- सत्य के साथ गांधी का अंतिम प्रयोग! उन्होंने इतने ही प्यार-संभाल से, अपनी कुर्सी से उठकर अपनी वह किताब मुझे दी... जैसे किताब नहीं, विरासत दे रहे हों। किताब पर सुंदर, कोमल अक्षरों में लिखा उन्होंने : इन द नेम ऑफ पीस ऐंड फ्रेंडशिप!... शांति व दोस्ती के नाम! ...डगलस का पूरा व्यक्तित्व बेहद पारदर्शी है— बहुत कुछ जयप्रकाश की तरह!

इस किताब में नया कुछ भी नहीं है— लेकिन यह बहुत नई नजर से लिखी गई है। मृत्यु से आदमी का रिश्ता; आदमी का सत्य से रिश्ता; सत्य का आदमी के होने से रिश्ता— कई स्तरों पर डगलस इन सबको जांचते हैं; और गांधी के जीवन में इसके सूत्र तलाशते हैं। गांधी मृत्यु के साथ अपना रिश्ता जिस तरह तय करते हैं, डगलस उसकी भी गहन पड़ताल करते हैं। डगलस ईसा से गहरे प्रभावित ईसाई हैं। वे गांधी में ईसा-तत्वों की तलाश करते हैं। गांधी भारतीय चिंतन व जीवन-परंपरा के अत्यंत मौलिक प्रतिनिधि हैं। इसलिए डगलस के 'अकथनीय' को कथनीय बनाने की चुनौती **प्रेरणाजी** ने स्वीकार की। गांधी अध्येताओं की हमारी युवा जमात में अपनी खास जगह रखने वाली प्रेरणा आधुनिक अर्थशास्त्र पर पूरी पकड़ रखती हैं; और गांधी में गहरी आस्था! डगलस को पढ़ते हुए उन्होंने मुझसे बहुत सारे सवाल किए; बहुत सारे जवाब खोजे और फिर अपनी प्रेरणा से, डगलस की किताब का यह अपूर्व सार-संक्षेप लिखा। स्वाभाविक ही है कि इसमें डगलस के 'अकथनीय गांधी' तो हैं ही, प्रेरणा के भारतीय गांधी भी लगातार मौजूद हैं।

यह अंक एक दस्तावेज है— संभाल कर रखने लायक, बार-बार पढ़ने और बार-बार ग्रहण करने लायक। महात्मा गांधी की हत्या जिन ताकतों ने की और वे जिस सामाजिक-राजनीतिक दर्शन को मानते हैं, भारतीय समाज को वे जिस दिशा में ले जाना चाहते हैं, उसका एक ही हथियार है उनके पास— असत्य व भ्रम का घटाटोप रचना! अक्सर यह घटाटोप इतना घना और व्यापक होता है कि हम भी इसमें उलझ या खो कर रह जाते हैं। ऐसा जब भी हो, यह अंक हमारी मदद करेगा और हम फिर-फिर अपना गांधी पा लेंगे, इस आशा व विश्वास के साथ यह अंक हम अपने पाठकों को अर्पित करते हैं।

कु.प्र.

गांधीः अकथनीय सत्य का ताप

अमरीकी अध्येता व शांति के सिपाही जेम्स डब्ल्यू. डगलस की किताब का नाम है 'गांधी ऐंड द अनस्पीकेबल : हिज फाइनल एक्सपेरिमेंट विद ट्रुथ'। यह महात्मा गांधी की हत्या की कहानी भर नहीं बताती है, उससे जुड़े तमाम सांस्कृतिक, मानवीय जरूरी सवाल खड़े करती है। हम सभी गांधीजन डगलस के आभारी हैं कि उन्होंने यह संपूर्ण परिदृश्य हमारे लिए खोला और हमें ही हमारी दशा व दिशा का फिर से भान कराया

60 के दशक में एक ख्रिस्ती संन्यासी लेखक हुआ था थॉमस मेर्टन। उसने जीवन को और उसके रहस्यों को जानने की बहुत कोशिश की; और फिर वह इस नतीजे पर पहुंचा कि हमारे पास सच्चाइयों का एक बहुत बड़ा जखीरा ऐसा है जिसे हम सब जानते तो हैं लेकिन उसकी चर्चा नहीं करते– अनकहा सच!! मेर्टन कहते हैंः यह वह सच है जिसे झेलने का सामर्थ्य हममें नहीं है– यह हमारे जीवन की, हमारी दुनिया की वह कड़वी सच्च्चाई है जिससे सभी मुंह चुराते हैं। यह डर या मुंह चुराना हमारे भीतर एक अंधकार का या शून्य का निर्माण करता है जिसकी गुमनामी में दूसरी सच्चाइयों का बार-बार कत्ल होता रहता है। यही कारण है कि हमारी दुनिया भीतर-ही-भीतर इतनी घायल व रक्तरंजित है।

यह अनकहा या अकथनीय क्या है? मेर्टन कहते हैंः एक गहरा सन्नाटा रचा गया है, जो सब कुछ लील लेता है। सरकारी घोषणा हो कि कानूनी फैसला कि कोई औपचारिक बयान कि ऐतिहासिक साक्ष्य, सब-के-सब खोखले जान पड़ते हैं क्योंकि सभी इस सन्नाटे में खो जाते हैं। यही सन्नाटा है कि जो हमें उस सूक्ष्म और शुद्ध सच्चाई का भान कराता है, जो सामने है पर अनकहा या अकथनीय है। ऐसा क्यों है? उनका जवाब हैः "क्योंकि हम उस सच को बोलने के बाद के परिणाम से डरते हैं।" तो फिर यह जरूरी ही क्यों है कि हम उस अनकहे का सामना करें? वे फिर जवाब देते हैंः "क्योंकि उस अनकहे से पैदा हुए